बावजूद भी उनकी सुरक्षा की व्यवस्था नहीं की गई। उसमें जितना दोषी विश्वनाथ प्रताप सिंह को मैं समझता हूं उतना ही दोषी मैं आर. वेंकटरामन को समझता हूं। मैं यह मांग करता हूं कि वो कार्यवाही उनके खिलाफ भी होनी चाहिए और उनको भी जैन कमीशन के समाने बुलाना चाहिये। धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Parliamentary Affairs Minister, may I have your attention? The hon. Members have expressed their concern and the House is unanimous on the lain Commission's observations in regard to the non-sharing of documents by the Government of India as also by the State Government of Tamil Nadu.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI RAMESHWAR THAKUR): Sir, this is a very serious matter and the concern expressed by the hon. Members will be conveyed to the Home Minister for necessary action.

Proposed Hoisting of National Flag by BJP at Idgah Maidan Hubli

श्री अजीत जोगी (मध्य प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं अत्यन्त गम्भीर और सार्वजनिक महत्व के विषय की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। हम सब को याद है कि किस तरह से इस देश में साम्प्रदायिक और फासीवादी ताकतों ने धर्म के नाम पर लोगों को लड़ा कर आयोध्या को प्रतीक बना कर एक दूसरे से अलग किया था और पूरे देश में साम्प्रदायिक उन्माद व्याप्त हो गया था। मैं बड़े खेद और चिन्ता के साथ यह कहना चाहता हूं कि अब वैसी ही कोशिश जो उत्तर भारत में भारतीय जनता पार्टी के लोगों ने, राष्ट्र स्वयं सेवक संघ के लोगों ने, विश्व हिन्दू परिषद के लोगों ने इन फासीवादी ताकतों ने उत्तर भारत में जो कोशिश की थी जिस तरह से उन्होंने पूरे देश को साम्प्रदायिक ज्वाला में झौंक दिया था, बिल्कुल वैसी कोशिश अब दक्षिण भारत में हो रही है। कर्नाटक राज्य के हुबली में ईदगाह मैदान को ले कर उसी तरह से भावनाएं भड़काई जा रही हैं। हुबली का यह ईदगाह मैदान वहां की अंजुमन को सन् 1922 में दिया गया था। उसके बाद से मुसलसल, लगातार अंजुमन के पास ही है। अब कर्नाटक की भारतीय जनता पार्टी ने यह धमकी दी है कि इस 15 अगस्त को हम उस ईदगाह मैदान में सार्वजनिक रूप से तिरंगा झंडा फहरायेंगे। ईदगाह मैदान में झंडा फहराने की जो धमकी भारतीय जनता पार्टी के लोगों ने दी है, उसका लक्ष्य केवल यह है जिस तरह से अयोध्या उन्होंने बाबरी मस्जिद को ले कर, प्रतीक मान कर, उन्माद फैलाया था, उसी तरह से कर्नाटक में हुबली में इस तरह की वारदात कर के, घटना कर के सार्वजनिक आयोजन कर के सार्वजनिक उन्माद फैलाना चाहते हैं। मेरा आपसे इसलिए यह निवेदन है कि इन ताकतों को हमने पहले भुगता है, इन ताकतों के कारण जिस तरह से, पूरे देश में धर्म के नाम पर लोग अलग हुए हैं, जिस तरह से धर्म के नाम को इस्तेमाल करके लोगों की भावनाओं को भड़काया गया है जिस तरह से देश की प्रगति को, उन्नति को रोका गया है, इसलिए इन ताकतों की साजिश पर, इनके षड्यंत्र पर रोक लगाना बहुत जरूरी है। 15 अगस्त को जो भारतीय जनता पार्टी कर्नाटक में करना चाहती है, उसमें वह केवल राजनैतिक लाभ लेना चाहती है और केवल राजनैतिक लाभ के लिए आने वाले विधान सभा चुनाव को देखते हुए वह धार्मिक उन्माद फैलाना चाहती है। ये इनका राजनैतिक लाभ लें या न लें पर इससे पूरा देश एक बार फिर से साम्प्रदायिक तनाव में आ जाएगा, फिर से साम्प्रदायिक दंगे होंगे, फिर से भाई भाई से लड़ेगा, फिर से खून की नदियां बहेंगी। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि इस मसले को, इस प्रकरण को केवल कर्नाटक की सरकार पर न छोड़ा जाए। कर्नाटक की सरकार कांग्रेस की सरकार है वह इस तरफ ध्यान दे रही है, पूरा इंतजाम, पूरा बंदोबस्त उन्होंने किया है पर हमें केवल राज्य सरकार पर यह बात नहीं छोड़नी चाहिए, यह एक ऐसी घटना है, एक ऐसा प्रकरण है जिसका पूरे देश से पूरे देश की भावना से, संवेदना से संबंध है। इसलिए केन्द्र सरकार को भी, गृह मंत्रालय को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए और जितनी भी इमदाद, जितनी भी मदद कर्नाटक की सरकार को आवश्यक हो वह देनी चाहिए और किसी भी हालत में भारतीय जनता पार्टी के लोगों को जो आज प्रजातंत्र पर विश्वास नहीं करते, इसलिए संसद में जिनकी ये बेंचे खाली हैं, जिन लोगों के हमारे सर्वोच्च न्यायालय के सामने गलत शपथ पत्र दिया, जिन लोगों ने इस सदन में गलत आश्वासन दिया, जिन लोगों को सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार साम्प्रदायिक करार दिया गया, उनको हम एक मौका फिर से न दें और हुबली में जो ईदगाह मैदान में तिरंगा झंडा फहराने के नाम पर फिर से साम्प्रदायिक तनाव फैलाना चाहते हैं चाहे हमें कितना भी कड़ा प्रयास क्यों न करना पड़े, चाहे कितनी ही पुलिस और पैरा मिलिटरी फोर्स, सेना क्यों न भेजनी पड़े, भारतीय जनता पार्टी के इन प्रयासों को हमें हर हालत में विफल करना चाहिए। उनको इस तरीके से साम्प्रदायिक तनाव फैलाने की कोई इजाजत नहीं देनी चाहिए।

मैं इस सदन के माध्यम से, आपके माध्यम से सरकार से, केन्द्र सरकार से यह निवेदन करता हूं कि भारतीय जनता पार्टी को उसके इस कुत्सित और घृणित प्रयास में सफलता न मिले इसके लिए हमें जागरूक होकर कदम उठाना चाहिए। धन्यवाद।

SHRI B.K. HARIPRASAD (Kamataka): Thank you, Mr. Vice-Chairman, Sir, I would like to associate myself with the views expressed by my hon. colleague, Shri Ajit Jogi, regarding some of the communal forces which are trying to hoist the National Flag at the Idgah grounds in Hubli. Sir, this is not the first time that they are trying this political method to gain strength in the Southern part of the country. We have witnessed the worst possible communal riots after the 6th December, 1992 incident. They thought that they could get some political mileage out of it, but the people of the Northern States have shown them their right place. For this so-called disciplined VHP or RSS, whoever it is, discipline has become a mockery. Sir, even in a circus the animals the beasts are disciplined only to perform in a particular place. Just because they are disciplined, we cannot allow the human beings to go near those beasts. Such is the discipline of these VHP and RSS people who are trying, in the name of patriotism, to gain their political ends! And they call us pseudosecularists. They are the pseudo-Hindus of this country. They may be having various plans and programmes because the elections are coming very fast In Kamataka, within two months we are going in for elections. They cannot fool the people of the South, especially with this pseudo-patriotism movement. People know that the Congress Party alone has got leaders who have sacrificed their lives and everything for the sake of the country and for the sake of the people of this country. They don't have a single leader about whom they can proudly say that he has sacrificed his life for the nation and for the people of this country. Some of die VHP leaders in Kamataka claim that they are secular. One of the VHP leaders is a Swamiji of a *mutt* in Udupi where, leave alone allowing the Scheduled Castes to enter the temple, even the Bankward Classes are not allowed to enter the temple. The historic monument of the great Kanaka-dasa, one of the great poets of Kamataka, who was a shepherd by caste, is still there. He was a great devotee of Lord Krishna. When he visited the temple, the temple authorities did not allow him to enter the temple. The poor fellow stood outside the temple and started praying to Lord Krishna. Seeing his pathetic condition, the idol of Lord Krishna itself turned around towards Kanakadasa. Such is the history of this temple. Let them first think of letting their own Hindu brothers and sisters into this temple before they speak of partriotism or of a Hindu *rashtra* It is not just the case of Kamataka Government. The whole country should stand against and oppose these pseudo-secularists and pseudo-Hindus who are trying to distrurb the peace and harmony in the State of Kamataka. Thank you.

श्री एस.एस. अहलुवालिया (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, अजीत जोगी जी ने और हरिप्रसाद जी ने जो मुद्दा उठाया है, मैं उसका समर्थन करता हूं और यह एक बहुत ही सोचनीय सवाल है कि अगर हम सोचें कि स्वाधीनता दिवस पर राष्ट्र ध्वज को लेकर कोई कहीं पर या राष्ट्र ध्वज का अपना उसका पर्व पालन किया जाए तो उस पर कोई रोक नहीं होनी चाहिए। पर अगर मंशा खराब हो, अगर सोच खराब हो तो एक प्रश्न चिन्ह लग जाता है।

महोदय, आपको याद होगा कि जब आडवाणी जी ने अपनी रथयात्रा शुरू की तो सोमनाथ से लेकर अयोध्या तक की यात्रा में उन्होंने उन रास्तों को, ऐसी कंस्टीट्यूऐंसीज को या ऐसे शहरों को चुना जो रायट प्रोन एरिया है, जहां पर दंगे कराए जा सकते हैं या भड़काए जा सकते हैं। अगर ये राष्ट्रध्वज के इस पर्व को पालन करते हुए भारत के तिरंगे परचम को लेकर स्वाधीनता दिवस पर ध्वजारोहण करने के लिए कहीं ऐसी जगह जाते जहां राष्ट्र ध्वज आंदोलन शुरू हुआ, झंडा आंदोलन जहां से शुरू हुआ या किसी ऐसी ऐतिहासिक जगह पर जाकर कुछ करते जो हमारे स्वाधीनता संग्राम आंदोलन से जुड़ी हुई है तो हमें कोई शंका नहीं होती, कोई संदेह नहीं होता। पर इसके पहले उन्होंने कन्याकुमारी से लाल चौक का रास्ता यूं ही चुना और वहां पर भी ऐसे रास्ते चुने कि जिन-जिन डिस्ट्रिक्ट्स या जिस शहर में कम्युनल टेंशन की जा सकती है। अपने रूट मैप में ऐसे शहरों को रखा और आज भी उन्होंने एक ऐसे शहर को चुना है। महोदय, यह शहर धारवाड़ और हुबली एक ट्विन सिटी है और यह ट्विन सिटी ही नहीं है बल्कि यह कर्नाटक का बहुत बड़ा ग्रेन मार्केट भी हुबली है। हुबली शहर एक ऐसा शहर है कि जैसा कि हरिप्रसाद ने अभी बताया कि हुबली शहर में 6 दिसम्बर के बाद बहुत तगड़े कौमी दंगे हुए, बहुत ज्यादा रोष प्रकट किया। वहां पापुलेशन बंटी हुई

है। जिस तरह से सिकंदराबाद और हैदराबाद ट्विन सिटी है उसी तरह से धारवाड़ और हुबली भी एक ट्विन सिटी है। वहां के लोगों के दिल को और उनके इमोशंस को भड़काने के लिए यह एक कोशिश है, एक पहल है, जिसको रोकना हरेक भारतवासी का फर्ज है कि यह कौमी जुनून की आग को भड़का कर अगर देश के टुकड़े-टुकड़े करना चाहते हैं या भारत माता के आंचल को आग लगाना चाहते हैं..... ।

इस कोशिश को रोकना हमारा फर्ज है। महोदय, मैं समझता हूं कि हुबली को चुनने के पीछे इनका सिर्फ एक कारण है कि आने वाले दो-तीन महीनों के अंदर कर्नाटक में चुनाव होने जा रहे हैं और महोदय हुबली में कौन सा मैदान चुना? वहां क्रांति मैदान है, महात्मा गांधी मैदान है या इनके गोलवलकर का मैदान है, लेकिन इन्होंने चुना ईदगाह मैदान ये ईदगाह मैदान में जाकर वहां गड़बड़ कराना चाहते हैं। अगर यह चुनते दिने बादल दिनेश जी की जगह को, खुदीराम बोस को जहां फांसी लगी थी, कवि नसरूल के गांव को, शांति निकेतन को, चन्द्रशेखर आजाद के गांव को या शहीद भगत सिंह को जहां फांसी लगी थी, उस इलाके को चुनते तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होती, पर इन्होंने एक ऐसी जगह चुनी जहां कि ये कौमी दंगा कराना चाहते हैं, फसाद कराना चाहते हैं और देश को यह मैसेज देना चाहते हैं कि भारत का मुसलमान हिंदुस्तान का तिरंगा झंडा वहन नहीं करना चाहता, जोकि गलत बात है क्योंकि जिस दिन 15 अगस्त होता है उस दिन हरेक भारतवासी राष्ट्रीय पर्व के रूप में पालन करता है और जो लोग थोड़ा सा भी इन चीजों से जुड़े हुए हैं, देशप्रेम की भावना से जुड़े हुए हैं, वह तिरंगे झंडे को लेकर या बैज लगाकर अपने इलाके में इस पर्व को स्वाधीनता दिवस के रूप में पालन करते हैं और मिष्ठान वितरण करते हैं, पर इनकी यह कोशिश मिष्ठान वितरण करने के लिए या स्वाधीनता दिवस का पालन करने की कोशिश नहीं है बल्कि इस देश को बांटने की कोशिश है। भारत माता के आंचल को आग लगाने की कोशिश है। महोदय, इस कोशिश को नाकाम करना चाहिए।

महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करूंगा कि इस मसले को कर्नाटक सरकार के ऊपर ही न छोड़ा जाए, केन्द्रीय सरकार की ओर से भी इनमें इंटरवीन किया जाए और इसे रोका जाए। धन्यवाद।

SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO (Andhra Pradesh): Mr. Vice Chairman, Sir, I rise to share the sentiments expressed by my colleagues, Shri Ajit Jogi and others. I feel that this incident is a part of a grand design which we have been witnessing for a very long time. I would like to mention that if you go through the histories of various nations, you will see how different countries were built. Sir, religion and language have been the two major factors which have forced the people to form themselves into a nation or into a State or into a country. It was for the first time, after attaining Independence under the leadership of Mahatma Gandhi, that under the political ideology we formed ourselves into a nation. Let it be made very clear that anybody who tries to whip up religious or linguistic feelings will be only aiding and abetting the divisive and disintegrationist forces in the country. This has been going on for so many years. This is the tip of the iceberg. The Central Government should take necessary steps to see that these incidents are prevented. This should not be seen as an isolated incident. This is a part of the design which has been going on and it will continue to go on. Therefore, it should also be understood by the people of the country that those who propagate these philosophies are only trying to aid or encourage or abet the forces of disintegration within the country. The hon. Minister of Parliamentary Affairs and the senior Minister, Shri Arjun Singh are sitting here. I would like to take this opportunity to appeal to the Government that taking note of all these things that have been taking place and the nefarious designs that we have all seen very clearly, the Government should come forward with a Bill which was earlier sought to be introduced to delink religion from politics and once and for all put a lid over this clandestine design to which the country is being exposed in the garb of political parties and political activities that are taking place. Thank you.

प्रो. आई.जी. सनदी (कर्नाटक): सम्मानीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं आभारी हूं कि आपने मुझे मौका दिया। मैं चार साल से इस बारे में सोच रहा था कि यहां पर कुछ कहूं। महोदय, मैं उसी धारवाड शहर से आता हूं और यहां ईदगाह के बारे में जब कोई बातचीत होती है या कोई घटनाएं होती हैं, उनसे मेरा बहुत ही निकट का संबंध है। वैसे तो मैं यहां बैठा हूं, लेकिन मेरा मन कल, परसों होने वाली घटनाओं की ओर ही दौड़ रहा है। मैं इस अच्छे मौके पर उस पर थोड़ा प्रकाश डालना चाहता हूं। यह ईदगाह मैदान हुबली शहर का जो है, एक एकड़ चार गुंटा से बढ़कर है नहीं। एक जमाना था जब हिन्दु-मुसलमान भाइयों

ने बड़े प्यार से एक रेज़ोल्यूशन करके मुसलमान भाइयों को नामज़ पढ़ने के लिए यह जगह दी थी, वैसे तो रेज़ोल्यूशन के लिए जो प्रपोज़रस हैं वह हिन्दु भाई हैं। पहले यह जगह गांव के बाहर थी, जैसे अभी-अभी अहलुवालिया साहब कह रहे थे कि शहर बढ़ता चला गया और यह एक एकड़ चार गुंटा जमीन जो है,वह सीधे हर्ट आफ दि सेंटर, अब वह सिटी में आ गई है। इसके चारों तरफ से सात रोड जुड़े हैं नेशनल हाइवे नम्बर 4 भी लगा हुआ है, शोलापुर जाने वाला रोड लगा हुआ है, होसपेट जाने वाला रोड लगा हुआ है, कारवार जाने वाला रोड लगा हुआ है। सात जगहों के बीच में जब कभी रमज़ान की ईद आती है या बकरीद का खुतबा आता है तो तीन-तीन, चार-चार घंटे तक लाखों की तादाद में जब मुसलमान भाई वहां आकर जमा होते हैं तो ये सातों के सातों रोड वहां पर ब्लाक हो जाते हैं। अंजुमन इस्लाम , हुबली ने सोचा कि इस तरह सातों रोड को घंटों तक रोककर के लोगों को तकलीफ देने के बजाए जो जगह छोटी हो रही है, इसको क्यों न यहां से बदला जाए। इस तरह अंजुमन इस्लाम ने सोचा और गवर्नमेंट आफ कर्नाटक, उस वक्त कर्नाटक तो थी नहीं, गवर्नमेंट आफ मैसूर से उन्होंने अपील की, एक रेज़ोल्यूशन भेजा। रेज़ोल्यूशन में लिखा था कि एक छोटी जगह जो है, हमने पंडित जवाहर लाल नेहरू के नाम से सबसे पहले मुसलमानों में एक तरह से मुसलमानों में तालीम के प्रति इंटरेस्ट पैदा करने के लिए पंडित जवाहर लाल नेहरू के नाम से आर्ट एंड कामर्स एंड साइंस कालेज उन्होंने यहां पर शुरू की। उसके रचयिता जो हैं, फारमर होम मिनिस्टर साहब, श्रीमान एफ.एम. मोहसिन साहब हैं। उन्होंने सोचा कि यहां पर एक कालेज बना लेंगे, नीचे शाप्स होगी, ऊपर कालेज बनेगा और शाप्स से जो कुछ भी इंकम होगी उससे यह कालेज चलाएंगे और मुसलमानों में जो बेगारी है, एजुकेशनल बेकवर्डनैस है, उसको दूर करने के लिए पूरे डिस्ट्रिक्ट में हम स्कूल खोलेंगे। इतने पाक इरादे से अंजुमन इस्लाम, हुबली ने चेंज आफ परपज़ के लिए गवर्नमेंट आफ मैसूर को लिखा। गवर्नमेंट आफ मैसूर ने परमिशन देने से पहले 6 कंडीशन्स डाल दी वह मुझे याद हैं:

Anjuman Islam should not ask for another piece of land. For Idgah purpose or for *namaz* purpose, they must have their own arrangement independently. If they want to construct any building or shopping complexes there, they must obtain the necessary permission from the local authority or the corporation. They must go on paying the lease rent and the land has been given in rent for 999 years. They must go on paying the Re. 1/lease rent for the period. Whatever they collected in the form of rents, this might be utilised for the educational purpose of the minorities. This minority institution must be open for all community people.

ऐसी 6 कंडीशन्स डालकर उन्होंने परमिशन दे दी। परमिशन मिलने के बाद जब कारपोरेशन के पास अंजुमन इस्लाम परमिशन के लिए गए तो वहां उस वक्त जनसंघ भी थी कारपोरेशन में, जनसंघ और कांग्रेस, कांग्रेस वालों ने इसकी मदद करनी चाही, जनसंघ वाले जो थे, जो आज बी.जे.पी. वाले हैं, उन्होंने उसको अपोज़ किया और वहां से झगड़ा शुरू हो गया। उसके नाम से, ईदगाह के नाम से मैं समझता हूं कि कम्युनल फसादात् हुबली में कई लोगों की जान ले चुके हैं और रक्तपात हो चुका है। सर, मैं जानता हूं कि बहुत रक्त मुसलमानों ने इस देश की आजादी के लिए बहाया है, इस देश के झंडे के लिए बहाया है। अंजुमन कहिए, जहां कहीं भी कहिए, जितने भी मुसलमान इदारे यहां पर है, झंडे के प्रति, राष्ट्रध्वज के प्रति सबके मन में सद्‌भावना है। जब मैं वहां पर सिटी डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस का अध्यक्ष था 1990 तक, हजारों की तादाद में झंडे मैं वहां पर फहरा चुका हूं, मैं खुद उसका ज्वलंत उदाहरण हूं। वे लोग आते थे, अंजुमन से पूछते थे, अंजुमन इस्लाम उन्हें इजाज़त दे देती थी, लेकिन हुआ क्या? जब गवर्नमेंट लैंड के खिलाफ नहीं है और बिल्डिंग के खिलाफ जब कारपोरेशन नहीं है, इन्होंने क्या किया बी.जे.पी. वालों ने, क्योंकि वे बुद्धिमान थे, वहां पर 100 आदमियों के सिग्नेचर करके लोकल कोर्ट में चले गए और जैसे अयोध्या में एक जेंटलमैन हमारे खिलाफ, मस्जिद के खिलाफ जजमेंट देकर बाद में महाराज हो गए थे, वैसे ही वहां पर एक जज ऐसे आए कि 144 प्रमगलेट करके सिटी में उन्होंने जजमेंट ऐसा दिया कि ईदगाह, जो नमाज के लिए है, नमाज पढ़ी जाए, नमाज के बाद:

It must be treated as a public property. It is a Government property. Whatever buildings they have constructed already spending lakhs of rupees must be

मैं तो जजमेंट की निन्दा नहीं करना चाहता, क्योंकि वह तो कोर्ट का मैटर है। फिर वहां से हाई कोर्ट चले गए और हाई कोर्ट में भी वह हमारे खिलाफ हो गया। आज सुप्रीम कोर्ट में वह मामला पेंडिंग पड़ा है। जो भी आदेश सुप्रीम कोर्ट से मिलेंगे, वह मानेंगे। चाहे हर जगह भी, हर छोटा-बड़ा मुसलमान जो राष्ट्र ध्वज के प्रति सद्‌भावना, प्रेम और आदर्श रखने वाले मुसलमान वहां हैं। लेकिन यह बताना चाहते हैं कि यहां पर बसने वाला जो मुसलमान है, वह राष्ट्र के प्रति, राष्ट्र-ध्वज के प्रति वह द्रोह की भावना

रखता है, इस तरह की कुप्रचार करने की जो प्रथा यहां पर चली है, मैं समझता हूं कि ऐसी कोई बात है नहीं, वहां पर इनका कॉमन इंटरेस्ट है, वेस्टेड इंटरेस्ट है। यह ध्वज फहराना इनका है नहीं, वह यह ट्रीट करना चाहते हैं कि यह गवर्नमेंट की जगह है, हम जो चाहे कर सकते हैं। मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं कि जो मामला वहां पर पैंडिंग पड़ा है तब तक उनको रूकने दीजिए और मैं खुद लोगों को लेकर वहां पर शांति सद्‌भावना का माहौल बनाऊंगा। अब तक हम करते आए हैं, उसके प्रति कहीं भी किसी मुसलमान के मन में धारणा है ही नहीं। लेकिन यह बी.जे.पी. वाले यहां तक कि उमा भारती जैसे आकर वहां पर बहकाने का काम कर रहे हैं और यह कह रहे हैं कि अब तो अयोध्या खत्म हो गया, हुगली शहर को दूसरी अयोध्या बनाएंगे। जितना खून मुसलमानों ने इस देश की आजादी के लिए बहाया है। शायद ही बी.जे.पी. वालों ने बहाया होगा। इस तरह की सद्‌भावना रखने वाले....(व्यवधान)

श्री अजीत जोगी: एक छंटाक भी नहीं बहा उनका।

प्रो. आई.जी. सनदी: हिन्दू मुसलमान सभी भाई एक होकर राष्ट्र के प्रति, राष्ट्रध्वज के प्रति निष्ठा रखते हैं। बी.जे.पी. वाले यह जो वहां भड़काने की भावना पैदा कर रहे हैं, मैं इस सदन के माध्यम से हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना करना चाहता हूं कि हिन्दू मुसलमानों को अलग करने की जो एक भावना आप में है, इस भावना को, इस साजिश को आप तिलांजलि दे दीजिए। हिन्दू-मुसलमान हम सभी भारतीय हैं। इस तरह की भावना पैदा करने के लिए आप हमारे साथ आएंगे, हमारे साथ बैठेंगे तथा जो भी कोई काम करना है इस देश के प्रति, जीवन को न्यौछावर करने का काम है, इस देश का मुसलमान करता है। मुसलमान इस देश का वफादार है। उस वफा को लेकर अपने सिर पर रखकर वह चलेगा। इस विश्वास के साथ मैं चाहता हूं, मैं अपील करना चाहता हूं कि वहां पर बच्चों में इस तरह की भावना पैदा की जाती है कि वहां पर अब कर्फ्यू होने वाला है। कभी-कभी स्कूल के बच्चों से प्रश्न करेंगे कि 15 अगस्त क्या होता है, 26 जनवरी, क्या होता है आदि उनसे सवाल करेंगे। बताते हैं कि उस दिन कर्फ्यू का दिन होता है। इस तरह से बी.जे.पी. वाले जो बैड इम्प्रेशन क्रिएट कर रहे हैं और यहां आकर भाषण झाड़ने का जो काम कर रहे हैं। इस सदन के माध्यम से मैं अनुरोध करता हूं कि हिन्दु-मुसलमानों के मन में राष्ट्र को लेकर, राष्ट्रध्वज को लेकर इस तरह की भेद-भावना लाने की जो बातें कर रहे हैं, गलत है। कोई भी मुसलमान किसी शहर का कहिए, किसी देश का कहिए, वह राष्ट्रध्वज के खिलाफ नहीं है। जो मैटर वहां पर [illegible] है।

सुप्रीम कोर्ट को आगे करके वह, एफिडेविट देकर वह भजन करने वाले जो मस्जिद तोड़ सकते हैं, हमें डर लगा है कि उस मीनार पर चढ़कर अगर उसको भी ध्वस्त करेंगे। उन्होंने कहा है कि हम इसको सेकेण्ड अयोध्या बनाएंगे। मान्यवर, आप जानते हैं कि जब यहां पर मस्जिद टूटी, इस देश में नहीं पूरी दुनियां में कई हिन्दू मंदिरों को भी आघात पहुंचा। हम यह नहीं चाहते कि इनके बहकाने से वहां पर फिर खून-खराबा हो। हम कर जोड़कर, करबद्ध होकर उनसे कहना चाहते हैं कि शांति बहाल करें। अगर करना ही है तो हम हिन्दू-मुसलमान दोनों बैठकर बातें करें। मैं इस सदन से अनुरोध करूंगा कि वहां पर शांति का वातावरण लाने के लिए एक तरह का आदेश इस सदन से उनको मिले। यह मेरा अनुरोध है और आपसे प्रार्थना है धन्यवाद।

Re Non-Compliance with Reservation Policy Directives For Riling up of Posts

श्री मूलचन्द मीणा (राजस्थान): उपसभाध्यक्ष महोदय, देश के वित्त विभाग के द्वारा जो शेड्यूल्ड कॉस्ट और शैड्यूल्ड ट्राईब्स के लिए आरक्षण नीति है, उसका पालन नहीं किया जा रहा है। वित्त विभाग के अन्तर्गत बैंक हैं, कस्मट विभाग है, आयकर विभाग है और इंश्योरेंस कम्पनीज हैं। इन सभी विभागों के अंदर शैड्यूल्ट कॉस्ट और शैड्यूल्ड ट्राईब्स के आरक्षण की जो नीति है, उसको पूरा नहीं करते हुए और बैक-लॉग पीछे छोड़ते हुए रोज भर्तियां की जा रही हैं।

आजादी के 47 साल के बाद आरक्षण नीति लागू हुई। उसी शेड्यूल्ड कास्ट और शेड्यूल्ड ट्राइब्स के लोगों को जो रोज़गार नहीं मिला, उस आरक्षण नीति का मतलब क्या रह जाता है? इस बात के लिए इस सदन में कई बार चर्चा हुई है कि वित्त विभाग के कस्टम विभाग के अंतर्गत और चर्चा का जवाब वित्त मंत्री जी का हमारे पास आया और उस जवाब में यह कहा गया कि बैकलाग है शड्यूल्ड कास्ट और शैड्यूल्ड ट्राइब्स का, मार्च 1994 तक भर दिया जाएगा। उस जवाब के बाद एक भी भरती कस्टम विभाग में शड्यूल्ड कास्ट और शैड्यूल्ड ट्राइब्स की नहीं हुई। यही हाल बैंकों के अंदर है। बैंकों का बैकलॉग काफी दिनों से चला आ रहा था। उसको पूरा नहीं किया गया। यही स्थिति आयकर विभाग के अंदर भी है। इंश्योरेंस कंपनियों में तो नाम मात्र का रिज़र्वेशन नहीं दिया जाता है। तो मेरा सरकार से यह निवेदन है।

THE VICE-CHAIRMAN (Shri V. NARAYANASAMY): Mr. Meena, you have to conclude. We have to adjourn the House at